BA Part II (Sub/GEN)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

Lecture VI

VI) जनांकिकीय कारण

भारत में निर्धनता के प्रमुख कारण → मानवीय धन संबंधी दोष, संबंधी श्रम-मांग आदि जैसे आर्थिक कारण निर्धनता के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। निर्धनता में जनांकिकीय कारकों की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं है -

b) आयु एवं निर्धनता - भारत में लगभग 16% वृद्ध व्यक्ति निर्धन हैं तथा वे देश की कुल निर्धन जनसंख्या का सार्थक हिस्सा बनते हैं। प्रमुख बात यह है कि जिनको हम वृद्ध व्यक्ति कहते हैं वे वास्तव में काम करने के अयोग्य नहीं होते। 55 व 58 वर्ष की आयु बहुत अधिक आयु नहीं है, जो व्यक्ति की काम करने की क्षमता को समाप्त कर दे। अतः वृद्ध व्यक्तियों की स्थिति, बल्कुल व अनौपचारिक होती है। वे अपनी बचत को समाप्त करते जाते हैं, और क्योंकि लम्बे समय तक जिंदा रहते हैं। इस कारण उनके साधनहीन बनने की सम्भावनाएं बढ़ती जाती हैं। वृद्ध व्यक्तियों में निर्धनता उनके जैविकीय विकास की स्वाभाविक उपज नहीं है परन्तु यह आय के साधन के कम होने से तथा संचित बचतों के घटने से ही उत्पन्न होती है।

b) स्वास्थ्य और निर्धनता - अच्छा स्वास्थ्य दो प्रकार से आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है - एक, यह व्यक्ति को

अधिक धन कमाने की क्षमता देता तथा इससे यह बीमारियों पर वित्तीय व्यय कम करता है। जिस प्रकार बीमारी परिवार के आर्थिक साधनों को कम करती व उसे निर्धन बनाती है, उसी प्रकार निर्धनता बीमार पड़ने की सम्भावना को बढ़ाती है।

1) परिवार का आकार और निर्धनता => निर्धन व्यक्तियों पर दो आरोप लगाये जाते हैं-

(i) वे अपने परिवार के आकार को सीमित करने का प्रयास नहीं करते

ii) वे स्थिर परिवार स्थापित नहीं करते।

इन दोनों आरोपों का तात्पर्य यह है कि निर्धन व्यक्तियों में आत्म-नियंत्रण कम होता है, जिसके कारण वे स्वयं ही अपनी दुर्दशा व दुर्गति के लिए उत्तरदायी हैं। अतः निर्धनता और परिवार के ~~आकार~~ आकार में गहरा सम्बन्ध है।